आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:24-10-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर, सर्व-गुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आया है तुम्हें गुल-गुल (फूल) बनाने, तुम फूल बच्चे कभी किसी को दुख नहीं दे सकते, सदा सुख देते रहो.

इस ईश्वरीय विश्व-विधालय में पढ़ाई करने वाली हरेक आत्मा का लक्ष्य हैं - मनुष्य से देवी-देवता बनना.

इसका सबसे पहला पाठ है स्वयं को आत्मा समझना और दूसरों को भी आत्मा भाई समझकर व्यवहार में आना यानी दूसरों के प्रति आत्मिक भाव रखना. जब मैं आत्मा दूसरों को आत्मा समझकर व्यवहार में आता हूँ तो सामने वाले के प्रति मेरा दृष्टिकोण बदल जाता है. क्योंकि मुझे मालूम है कि हर आत्मा उसके ओरिजिनल दिव्य-गुणों, पवित्रता, सुख, शांति, आनंद, और प्रेम से भरपूर हैं. भल यह बात दूसरों को मालूम नहीं है लेकिन मुझे यह बात स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव ने बताई हैं. अगर इतनी बात भी मेरे ध्यान में रहे तो फिर मैं किसी को भी अपने मन-वचन-कर्म से दुख नहीं दूँगा.

इस ईश्वरीय पढ़ाई का एक और पाठ हैं - ड्रामा. अगर यह याद रहे की हरेक आत्मा इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में ऐक्टर हैं और अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं. यह ड्रामा का ज्ञान मुझे माया के हरेक वार से सेफ (safe) रखेगा. ड्रामा का ज्ञान मुझे सदा अचल-अड़ोल, निर्विघ्न बना देगा.

बाबा ने हमें जो भी श्रीमत् दी है उसे पालन करते रहने से ही हम माया से सदा बचे रहेंगे.

हमारा लक्ष्य है - मनुष्य से देवी-देवता बनना, तो हमें देवी-गुण भी अपने में धारण करना पड़े. बाबा कि मुरलीओं से निकाले गये कुछ मुख्य देवी-गुणों को आज हम पढ़ेंगे तो हमें उसे अपने में धारण करने में मदद मिलेगी.

सत्यता -- सत्यता यानी सच्चाई हैं, मैं जो हूँ, जैसा हूँ - सदा उस ओरिजिनल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना ही हैं. स्वयं की आत्म-अभिमानी स्थिति हो. आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता हैं. बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात सत्यता की सतोप्रधानता हो. सत्यता नेचरल संस्कार के रुप में हो. जैसे बाप को टुथ अथवा सत्य कहते है वैसे ही मेरी आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता सत्य और टुथ हो.

सफाई अर्थात स्वच्छता -- जरा भी संकल्प मात्र भी अशुद्धि अर्थात बुराई को वा अवगुण को टंच किया वा धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे. जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टंच करना हुआ. सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं. सफाई अर्थात स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो.

निर्भयता -- अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता. अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना.

मास्टर दुःख हरता – सुख करता -- किसी भी अन्य आत्मा के दुःख को स्वयं का दुख समझकर, उसे दूर करने का पुरा पुरुषार्थ करना. इसी देवी-गुण के आधार पर ही आज भी भक्त देवी-देवताओं के पास जाते है अपना दुःख दूर कराने. इसमें ध्यान रहें कि किसी का दुःख देखकर, स्वयं को दुःखी नहीं बनाना लेकिन बाबा की श्रीमत् के आधार पर ही अन्य आत्मा के दुःख को दूर करने का पुरा पुरुषार्थ जरूर करना. इसी से ही ऊंच पद प्राप्त होगा.

गुण-ग्राही और पर-उपकारी -- बाबा ने कहा है बाबा का हर एक बच्चा विशेष आत्मा है तो सदा दूसरों में रही विशेषताओं को ही देखो. किसी का कोई अवगुण नजर भी आता है तो पर-उपकारी बन किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देना.

दीपावली की आप सब को खुब-खुब बधाई हो, बधाई हो.

ॐ शांति. Atma Bhai – email: a.brahmin.soul@gmail.com .